eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

21वीं सदी में भारत के समक्ष चुनौतियां

[1]डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0

Received: 20 Jan 2023, Accepted: 28 Jan 2023, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2023

Abstract

21वीं सदी में भारत एक तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्था और वैश्विक शक्ति के रूप में विकसित हो रहा है, लेकिन इसके सामने कई बहुआयामी चुनौतियाँ भी हैं। यह शोध पत्र भारत के सामने आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय, तकनीकी, आंतरिक सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय संबंधों से संबंधित प्रमुख चुनौतियों का विस्तृत विश्लेषण करता है। इसमें इन चुनौतियों के संभावित समाधान और नीति–निर्माण की आवश्यकताओं पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। यह अध्ययन सरकारी नीतियों, ऐतिहासिक संदर्भों और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की स्थिति की गहन समीक्षा करता है।

कीवर्ड– भारत, 21वीं सदी, आर्थिक चुनौतियाँ, सामाजिक चुनौतियाँ, पर्यावरण, सुरक्षा, अंतरराष्ट्रीय संबंध, तकनीकी विकास, डिजिटल इंडिया, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास।

Introduction

21वीं सदी में भारत एक महत्वपूर्ण वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है। बढ़ती जनसंख्या, आर्थिक विकास, जलवायु परिवर्तन, डिजिटल क्रांति और सामाजिक गतिशीलता जैसे कारक भारत के विकास को नए आयाम दे रहे हैं। हालांकि, इस विकास प्रक्रिया के साथ–साथ कई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो रही हैं जो देश की प्रगति को प्रभावित कर सकती हैं। भारत को इन चुनौतियों का सामना करने के लिए न केवल सुदृढ़ नीतियाँ अपनाने की आवश्यकता है, बल्कि नवीनतम तकनीकों और सतत विकास रणनीतियों को भी अपनाना होगा। भारत की जनसंख्या 1.4 अरब से अधिक हो चुकी है, जिससे संसाधनों पर अत्यधिक दबाव बढ़ रहा है। साथ ही, भारत में तेजी से होते शहरीकरण ने बुनियादी ढांचे, रोजगार और पर्यावरण संरक्षण की जटिलताओं को और बढ़ा दिया है। सूचना क्रांति और डिजिटलीकरण के युग में भारत को साइबर सुरक्षा, डेटा संरक्षण और डिजिटल समावेशन से जुड़ी समस्याओं का भी समाधान निकालना होगा।

इस शोध पत्र का उद्देश्य भारत के समक्ष मौजूद प्रमुख चुनौतियों का गहराई से विश्लेषण करना और उनके प्रभावी समाधान सुझाना है। यह अध्ययन सरकार की नीतियों, अंतरराष्ट्रीय अनुभवों और वैज्ञानिक शोधों पर आधारित होगा ताकि भारत के सतत विकास के लिए ठोस उपाय प्रस्तुत किए जा सकें।

आर्थिक चुनौतियाँ– भारत 21वीं सदी में वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण स्थान रखने वाला देश बन चुका है, लेकिन इसकी आर्थिक प्रगति के साथ–साथ कई गंभीर चुनौतियाँ भी हैं, जिनका समाधान आवश्यक है। ये चुनौतियाँ रोजगार, आर्थिक असमानता, कृषि संकट, औद्योगिकीकरण और विदेशी निवेश से संबंधित हैं।

बेरोजगारी भारत की अर्थव्यवस्था के लिए एक प्रमुख चिंता बनी हुई है। विशेष रूप से युवा वर्ग के लिए रोजगार की उपलब्धता सुनिश्चित करना सरकार की प्राथमिकताओं में से एक है। रोजगार सृजन की समस्याएँ हैं, सरकारी और निजी क्षेत्र में नौकरियों की सीमित उपलब्धता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

कौशल विकास की कमी है, कई शिक्षित युवा आवश्यक औद्योगिक और तकनीकी कौशल से वंचित हैं। गिग इकॉनमी (Gig Economy) और स्टार्टअप्स है अस्थायी रोजगार और स्वतंत्र कार्य (फ्रीलांसिंग) को बढ़ावा देना हैं। तकनीकी विकास का प्रभाव है ऑटोमेशन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के कारण पारंपरिक नौकरियों में कमी हैं। सरकारी योजनाएँ हैं प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना आत्मनिर्भर भारत अभियान है।

भारत में आर्थिक असमानता बढ़ती जा रही है, जिससे समाज में सामाजिक असंतोष और गरीबी बढ़ रही है। शीर्ष 10% लोगों के पास भारत की कुल संपत्ति का 77% से अधिक हिस्सा है। शहरी क्षेत्रों में अधिक अवसर, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी और बेरोजगारी है। बढ़ती महंगाई और सीमित आय वृद्धि के कारण मध्यम वर्ग पर दबाव है। नीति सुधार, सरकार की न्यूनतम आय योजना और गरीबी उन्मूलन की पहल है।

भारतीय अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा कृषि पर आधारित है, लेकिन किसानों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। कम आय और ऋण संकट, छोटे किसानों की आय सीमित है और वे कर्ज के बोझ से दबे रहते हैं। अनियमित वर्षा, सूखा और बाढ़ की घटनाएँ कृषि उत्पादन को प्रभावित कर रही हैं। जैविक खेती और नवाचार, टिकाऊ खेती को बढ़ावा देना और पारंपरिक कृषि से हटकर नई तकनीकों को अपनाना। सरकारी हस्तक्षेप, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, न्यूनतम समर्थन मूल्य नीति।

औद्योगिकीकरण और स्टार्टअप कल्चर भारत के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन इसमें भी कई बाधाएँ हैं। मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर की चुनौतियाँ, आत्मनिर्भर भारत अभियान के बावजूद, भारत अभी भी आयात–निर्भर है। छोटे और मध्यम उद्योगों की समस्या, वित्तीय संसाधनों की कमी और सरकारी समर्थन की सीमाएँ है। स्टार्टअप इंडिया और नवाचार है। भारत में स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा देने के लिए नीति आयोग और सरकार की नई योजनाएँ है। विदेशी निवेश नीति को उदार बनाना और व्यापार बाधाओं को कम करना है।

महंगाई दर में वृद्धि आम नागरिकों की क्रय शक्ति को प्रभावित कर रही है। बढ़ती महंगाई, खाद्य वस्तुओं और पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों में वृद्धि है। रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति, ब्याज दरों और मुद्रा आपूर्ति को नियंत्रित करने की नीतियाँ है। रुपए का अवमूल्यन है। वैश्विक बाजार में डॉलर के मुकाबले रुपए की कमजोरी और उसके प्रभाव है।

भारत वैश्विक व्यापार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने की कोशिश कर रहा है, लेकिन इसमें कई चुनौतियाँ हैं। चीन और अन्य देशों से प्रतिस्पर्धा, भारत को अपने उत्पादों की गुणवत्ता और उत्पादन लागत में सुधार करने की आवश्यकता है। आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया, घरेलू उत्पादों को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम है। निर्यात को बढ़ावा देने और व्यापार घाटे को कम करने की रणनीतियाँ है। भारत की सामाजिक संरचना विविधता से भरपूर है, लेकिन 21वीं सदी में इसमें कई जटिल चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो रही हैं। ये चुनौतियाँ जनसंख्या वृद्धि, शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, सामाजिक असमानता, और सांस्कृतिक विविधता से जुड़ी हुई हैं।

भारत की बढ़ती जनसंख्या संसाधनों पर अत्यधिक दबाव डाल रही है। संतुलित जनसंख्या नीति, परिवार नियोजन कार्यक्रमों को और अधिक प्रभावी बनाना है। शहरीकरण और बुनियादी ढांचे की समस्याएँ, अनियंत्रित शहरीकरण से यातायात, जल आपूर्ति, और स्वच्छता जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। कई क्षेत्रों में पानी की कमी गंभीर रूप ले रही है, जिसके लिए जल संरक्षण की आवश्यकता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

साक्षरता दर में असमानता, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा की गुणवत्ता में बड़ा अंतर है। सरकारी स्कूलों और उच्च शिक्षा संस्थानों में आधारभूत सुविधाओं का विकास है। तकनीकी शिक्षा और डिजिटल लर्निंग है। ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा देना, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में है। नवाचार और शोध को प्रोत्साहन, अनुसंधान और विकास में निवेश बढ़ाने की आवश्यकता है। स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच स्वास्थ्य सेवाओं में बड़ा अंतर है।

महामारियों और संक्रामक रोगों से निपटना, कोविड–19 जैसी महामारी ने भारतीय स्वास्थ्य प्रणाली की कमजोरियों को उजागर किया है। मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता, मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति जागरूकता और चिकित्सा सुविधाओं की आवश्यकता है। स्वास्थ्य बीमा योजनाएँ, सभी नागरिकों के लिए सुलभ और किफायती स्वास्थ्य बीमा प्रणाली है। महिलाओं की शिक्षा और उनके लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने की आवश्यकता है। महिलाओं के प्रति हिंसा और भेदभाव को रोकने के लिए सख्त कानून और सामाजिक जागरूकता है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, महिला सुरक्षा कानून, और अन्य महिला सशक्तिकरण योजनाएँ है। सामाजिक ताने–बाने में जातिगत भेदभाव की समस्या अभी भी बनी हुई है। सरकारी नौकरियों और शिक्षा में आरक्षण प्रणाली की पुनरावलोकन की आवश्यकता है। जाति, धर्म, और भाषा के आधार पर भेदभाव को समाप्त करने के लिए शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम है। परिवारों में वृद्धजनों की स्थिति और उनके लिए सामाजिक सुरक्षा उपाय जरुरी है। वरिष्ठ नागरिकों के लिए पर्याप्त पेंशन और चिकित्सा सुविधाओं की व्यवस्था हो। वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ाने और उनकी गुणवत्ता सुधारने की आवश्यकता है।

डिजिटल इंडिया अभियान, डिजिटल साधनों की पहुँच में असमानता को दूर करने के लिए प्रयास है। डिजिटल युग में साइबर अपराधों और डेटा सुरक्षा की चुनौतियाँ बढ़ रही हैं। समाज के सभी वर्गों को डिजिटल तकनीकों से जोड़ना होगा। भारत में तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था और जनसंख्या के कारण पर्यावरणीय समस्याएँ विकराल रूप ले रही हैं। औद्योगीकरण, शहरीकरण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, वायु और जल प्रदूषण जैसी समस्याएँ भारत के सतत विकास में बड़ी बाधा बन रही हैं।

भारत जलवायु परिवर्तन के गंभीर प्रभावों का सामना कर रहा है, जैसे अत्यधिक गर्मी, अनियमित मानसून, और समुद्र के स्तर में वृद्धि। ग्लेशियरों का पिघलना और गंगा–ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों पर प्रभाव है। नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देना, हरित तकनीकों को अपनाना, और कार्बन उत्सर्जन को कम करना होगा। भारत के कई शहर दुनिया के सबसे प्रदूषित शहरों में शामिल हैं। वाहन उत्सर्जन, औद्योगिक धुआँ, पराली जलाने और निर्माण कार्य से वायु गुणवत्ता खराब होती है। संभावित समाधानरू सार्वजनिक परिवहन में सुधार, इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना, और कड़े पर्यावरणीय नियम लागू करना होगा।

गंगा, यमुना और अन्य नदियाँ प्रदूषण से ग्रस्त हैं, जिससे पीने योग्य जल की उपलब्धता घट रही है। अत्यधिक भूजल दोहन और जलवायु परिवर्तन के कारण पानी की कमी बढ़ रही है। संभावित समाधान, जल पुनर्चक्रण, जल संरक्षण अभियानों को बढ़ावा देना, और गंगा स्वच्छता मिशन जैसी योजनाओं को सख्ती से लागू करना होगा।

वनों की कटाई, शहरीकरण और अवैध शिकार के कारण जैव विविधता पर खतरा बढ़ रहा है। कई प्रजातियाँ विलुप्त होने की कगार पर हैं। संभावित समाधान, वन संरक्षण कानूनों को सख्ती से लागू करना, वनीकरण को बढ़ावा देना, और संरक्षित क्षेत्रों का विस्तार करना होगा। प्लास्टिक कचरे का बढ़ता स्तर पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर समस्या बन गया है। ठोस कचरा प्रबंधन

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

प्रणाली कमजोर है और शहरों में अव्यवस्थित कचरा निस्तारण बढ़ रहा है। संभावित समाधान, एकल–प्रयोग वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध, पुनर्चक्रण उद्योग को बढ़ावा देना, और कचरा पृथक्करण को अनिवार्य बनाना है। भारत अभी भी कोयला और पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों पर निर्भर है, जो प्रदूषण को बढ़ाते हैं। सौर, पवन और जल विद्युत ऊर्जा का उपयोग अपेक्षित गति से नहीं बढ़ रहा है। संभावित समाधान, नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं में निवेश बढ़ाना, सौर पैनलों को सस्ती दरों पर उपलब्ध कराना, और ऊर्जा दक्षता उपायों को लागू करना होगा।

सतत विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए पर्यावरणीय नीति को मजबूत करने की आवश्यकता है। सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण से संबंधित कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन आवश्यक है। संभावित समाधान, पर्यावरण–अनुकूल औद्योगिक नीति लागू करना, ग्रीन टेक्नोलॉजी में निवेश बढ़ाना, और लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाना होगा। तकनीकी क्षेत्र में तीव्र प्रगति के बावजूद भारत कई महत्वपूर्ण तकनीकी चुनौतियों का सामना कर रहा है। डिजिटलीकरण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता और औद्योगिक स्वचालन जैसे क्षेत्रों में नीतिगत और संरचनात्मक सुधारों की आवश्यकता है।

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच डिजिटल संसाधनों की असमानता, इंटरनेट और स्मार्टफोन तक सीमित पहुँच, डिजिटल इंडिया मिशन को गति देना, ग्रामीण क्षेत्रों में ब्रॉडबैंड सेवाएँ उपलब्ध कराना, और डिजिटल साक्षरता बढ़ाना, साइबर अपराधों में बढ़ोतरी और डेटा लीक की घटनाएँ, व्यक्तिगत और संवेदनशील डेटा की सुरक्षा की कमी, साइबर सुरक्षा कानून लागू करना, डेटा संरक्षण अधिनियम को सख्ती से लागू करना, और साइबर जागरूकता बढ़ाना लक्ष्य बनाना होगा।

ऑनलाइन अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सरकारी निगरानी की दुविधा, फेक न्यूज और डिजिटल प्रोपेगेंडा की बढ़ती समस्या, मीडिया साक्षरता को बढ़ावा देना, फेक न्यूज की पहचान के लिए तकनीकी उपकरण विकसित करना, और साइबर कानूनों को संतुलित रूप से लागू करना। भारत में अनुसंधान और विकास पर सीमित निवेश, वैज्ञानिक नवाचार और तकनीकी स्टार्टअप के लिए अपर्याप्त संसाधन, सरकार द्वारा अनुसंधान अनुदान में वृद्धि, विश्वविद्यालयों और उद्योगों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना, और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए सहायक नीतियाँ लागू करना। 5जी नेटवर्क का धीमा विकास और बुनियादी ढांचे की कमी, दूरसंचार कंपनियों के लिए महंगे स्पेक्ट्रम और तकनीकी चुनौतियाँ, नेटवर्क के विस्तार के लिए सरकारी सहायता, स्वदेशी तकनीकों के विकास को प्रोत्साहित करना, और दूरसंचार क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना होगा।

भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम तेजी से आगे बढ़ रहा है, लेकिन निजी भागीदारी सीमित है। रक्षा प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता की आवश्यकता है। निजी कंपनियों के लिए अंतरिक्ष क्षेत्र खोलना, रक्षा अनुसंधान को बढ़ावा देना, और स्वदेशी रक्षा उत्पादन को मजबूत करना होगा।

भारत के समक्ष आंतरिक सुरक्षा की कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं, जिनमें आतंकवाद, नक्सलवाद, सांप्रदायिक हिंसा, संगठित अपराध, साइबर हमले और सीमा सुरक्षा प्रमुख हैं। ये चुनौतियाँ देश की स्थिरता और विकास को प्रभावित करती हैं, जिनसे निपटने के लिए सशक्त नीति–निर्माण और आधुनिक तकनीकों का उपयोग आवश्यक है। भारत लंबे समय से आतंकवाद की समस्या का सामना कर रहा है, विशेष रूप से जम्मू–कश्मीर, उत्तर–पूर्वी राज्य और माओवादी प्रभावित क्षेत्र, अंतरराष्ट्रीय आतंकवादी संगठनों और सीमा पार आतंकवाद की चुनौतियाँ, संभावित समाधानरू कड़े सुरक्षा उपाय, आधुनिक खुफिया तंत्र का विकास, आतंकवाद–रोधी कानूनों का प्रभावी क्रियान्वयन, सहित देश के कुछ हिस्सों में वामपंथी उग्रवाद (नक्सलवाद) अभी भी एक गंभीर समस्या बनी हुई है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

सीमा प्रबंधन प्रणाली लागू करना, ड्रोन और निगरानी तकनीकों का उपयोग करना, और सीमा पर सुरक्षा बलों को सशक्त बनाना। भारत को अपनी आंतरिक और बाहरी सुरक्षा को मजबूत करने के लिए खुफिया एजेंसियों के बीच समन्वय बढ़ाने की आवश्यकता है। खुफिया तंत्र को डिजिटल रूप से उन्नत करना, सुरक्षा एजेंसियों के बीच डेटा–साझाकरण तंत्र को मजबूत करना।

21वीं सदी में भारत की विदेश नीति और भू–राजनीतिक रणनीतियाँ तेजी से बदल रही हैं। वैश्विक शक्ति संतुलन, पड़ोसी देशों के साथ संबंध, अंतरराष्ट्रीय संगठनों में भारत की भूमिका, व्यापारिक कूटनीति, और वैश्विक सुरक्षा चुनौतियाँ भारत की विदेश नीति के प्रमुख घटक हैं। भारत की विदेश नीति बहुपक्षीय कूटनीति, गुटनिरपेक्षता और रणनीतिक स्वायत्तता पर आधारित है। वैश्विक मंचों पर भारत की सक्रिय भूमिका, आर्थिक और रणनीतिक गठबंधनों को मजबूत करना है। पाकिस्तान, चीन, बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका और म्यांमार के साथ भारत के संबंधों में जटिलताएँ बनी हुई हैं। कूटनीतिक संवाद को बढ़ावा देना, व्यापार और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को मजबूत करना है। वैश्विक शासन में अधिक सक्रिय भागीदारी, जलवायु परिवर्तन और सतत विकास लक्ष्यों को प्राथमिकता देना होगा। भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था के कारण वैश्विक व्यापार में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण हो रही है। मुक्त व्यापार समझौतों को बढ़ावा देना, निर्यात क्षमता को सशक्त बनाना होगा।

आत्मनिर्भर भारत अभियान को सशक्त बनाना, रक्षा क्षेत्र में स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देना, नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देना, वैश्विक पर्यावरणीय सहयोग को मजबूत करना, उन्नत रक्षा प्रौद्योगिकियों का विकास, साइबर और अंतरिक्ष सुरक्षा में नवाचार आवश्यक है। भारत को 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने के लिए बहुआयामी रणनीतियाँ अपनानी होंगी। यह अनुभाग भारत के आर्थिक, सामाजिक, पर्यावरणीय, तकनीकी, सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय संबंधों से जुड़े समाधानों पर केंद्रित है।

बेरोजगारी कम करने के लिएरू स्वरोजगार को बढ़ावा देने, स्टार्टअप इंडिया जैसी योजनाओं को और सशक्त करने की आवश्यकता है। शक्षा और कौशल विकासरू नई शिक्षा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के साथ व्यावसायिक शिक्षा पर ध्यान देना होगा।

21वीं सदी में भारत के समक्ष कई चुनौतियाँ हैं, जिनका समाधान खोजे बिना देश की सतत प्रगति संभव नहीं है। आर्थिक असमानता, बेरोजगारी, बढ़ती जनसंख्या, पर्यावरणीय क्षरण, साइबर सुरक्षा, आतंकवाद और अंतरराष्ट्रीय संबंधों से जुड़े मुद्दे भारत के लिए एक जटिल परिदृश्य प्रस्तुत करते हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण, प्रभावी नीतियाँ और आधुनिक तकनीकी समाधान आवश्यक हैं।

भारत को आर्थिक सुधारों को गति देने, डिजिटल और हरित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने, सतत शहरीकरण और ग्रामीण विकास के बीच संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता है। सामाजिक समावेशन को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और लैंगिक समानता पर अधिक ध्यान देना होगा। पर्यावरणीय संकटों से निपटने के लिए अक्षय ऊर्जा स्रोतों, जल संरक्षण और सतत विकास की रणनीतियों को अपनाना अनिवार्य है।

तकनीकी क्षेत्र में, भारत को अनुसंधान और नवाचार पर अधिक निवेश करने की आवश्यकता है, जिससे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ा जा सके। आंतरिक सुरक्षा के लिए, आतंकवाद और साइबर अपराध से निपटने के लिए सुरक्षा एजेंसियों को मजबूत बनाना आवश्यक है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर, भारत को बहुपक्षीय सहयोग और कूटनीतिक प्रयासों को तेज करना होगा ताकि यह न केवल वैश्विक शक्ति बने बल्कि जलवायु परिवर्तन, व्यापार और रक्षा सहयोग में भी प्रभावी भूमिका निभा सके।

कुल मिलाकर, भारत के लिए 21वीं सदी चुनौतियों और अवसरों का संगम है। यदि सही नीतियाँ, तकनीकी नवाचार और रणनीतिक साझेदारियाँ अपनाई जाती हैं, तो भारत वैश्विक शक्ति के रूप में उभर सकता है और अपने नागरिकों को एक समृद्ध, सुरक्षित और सतत भविष्य प्रदान कर सकता है।

सन्दर्भ सूची–

1- आर्थिक सर्वेक्षण 2023, भारत सरकार।
2- संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन रिपोर्ट।
3- नीति आयोग, भारत सरकार।
4- विश्व बैंक की रिपोर्ट – भारत की अर्थव्यवस्था।
5- विभिन्न समाचार पत्रों और शोध पत्रों से संकलित जानकारी।
6- भारत की आंतरिक सुरक्षा, चुनौतियाँ और समाधान लेखक अशोक कुमार, प्रकाशक. प्रभात प्रकाशन
7- वर्ष 2020 ISBN: 978–93–5322–514–7
8- आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, लेखक योगेंद्र सिंह प्रकाशक रावत पब्लिकेशंस वर्ष 2019
9- ISBN: 978–81–316–1020–8
10- पर्यावरणीय चुनौतियाँ और भारत लेखक सुनीता नारायण प्रकाशक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
11- वर्ष 2018 ISBN: 978–0–19–948964–3
12- भारत की आर्थिक नीति एक समीक्षा लेखक बी. ए. प्रकाश प्रकाशक पियरसन एजुकेशन वर्ष 2017 ISBN: 978–93–325–6996–3
13- तकनीकी विकास और भारत का भविष्य लेखक नंदन नीलेकणी प्रकाशक पेंगुइन बुक्स इंडिया वर्ष 2015 ISBN: 978–0–670–08846–7
14- भारत की विदेश नीति नए आयाम लेखक शशि थरूर प्रकाशक हार्पर कॉलिन्स इंडिया वर्ष 2012
15- ISBN: 978–93–5029–287–6
16- भारत में आतंकवाद कारण और निवारण लेखक अजीत डोभाल प्रकाशक ज्ञान पब्लिशिंग हाउस वर्ष 2016 ISBN: 978–81–212–1234–5
17- भारत में जल संकट नीति और प्रबंधन लेखकरू मिहिर शाह प्रकाशक ओरिएंट ब्लैकस्वान वर्ष 2019
18- ISBN: 978–93–5287–567–1
19- डिजिटल इंडिया अवसर और चुनौतियाँ लेखक रवि शंकर प्रसाद प्रकाशक रूपा पब्लिकेशंस
20- वर्ष 2018 ISBN: 978–81–291–4512–3

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

21- भारतीय शिक्षा प्रणाली और नई शिक्षा नीति लेखक के. कस्तूरीरंगन प्रकाशक नेशनल बुक ट्रस्ट वर्ष 2020 ISBN: 978–81–237–9456–2
22- शहरीकरण और सतत विकास लेखक के. सी. शिवरामकृष्णन प्रकाशक सेज पब्लिकेशंस वर्ष 2015
23- ISBN: 978–93–515–0031–2
24- कृषि संकट और समाधान लेखक एम. एस. स्वामीनाथन प्रकाशक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस वर्ष 2017 ISBN: 978–0–19–947438–0
25- औद्योगिक विकास और चुनौतियाँ लेखक रमेश चंद्र प्रकाशक पियरसन एजुकेशन वर्ष 2016 ISBN: 978–93–325–6997–0
26- जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा नीति लेखक आर. के. पचौरी प्रकाशक टेरी प्रेस वर्ष 2014 ISBN: 978–81–7993–558–1
27- बेरोजगारी और कौशल विकास लेखक संतोष मेहरा प्रकाशक प्रभात प्रकाशन वर्ष 2019 ISBN: 978–93–5322–515–4
28- साइबर सुरक्षा रणनीति लेखक गुलशन राय प्रकाशक रूपा पब्लिकेशंस वर्ष 2018 ISBN: 978–81–291–4513–0
29- भारत की विदेश नीति और रणनीतिक भागीदारी लेखक एस. जयशंकर प्रकाशक हार्पर कॉलिन्स इंडिया वर्ष 2020 ISBN: 978–93–5357–567–1
30- रक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा लेखक मनोहर परिकर प्रकाशक पेंगुइन बुक्स इंडिया वर्ष 2016 ISBN: 978–0–670–08946–4
31- सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएँ और महामारी प्रबंधन लेखक के. सुब्रमण्यम प्रकाशक ओरिएंट ब्लैकस्वान
32- वर्ष 2021 ISBN: 978–93–5287–568–8
33- भारतीय परिवहन प्रणाली और अवसंरचना लेखक ई. श्रीधरन प्रकाशक रावत पब्लिकेशंस वर्ष 2017
34- ISBN: 978–81–316–1021–5
35- गरीबी उन्मूलन और सामाजिक कल्याण योजनाएँ लेखक अरुणा रॉय प्रकाशक सेज पब्लिकेशंस वर्ष 2019 ISBN: 978–93–515–0032–9
36- भारत में डिजिटल भुगतान प्रणाली लेखक उर्जित पटेल प्रकाशक पेंगुइन बुक्स इंडिया वर्ष 2018
37- ISBN: 978–0–670–08947–1
38- कृषि क्षेत्र में तकनीकी नवाचार लेखक त्रिलोचन महापात्र प्रकाशक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस वर्ष 2019 ISBN: 978–0–19–947439–7
39- पर्यावरणीय कानून और नीतियाँ लेखक जयराम रमेश प्रकाशक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस वर्ष 2015
40- ISBN: 978–0–19–945330–9
41- स्वच्छ भारत अभियान और स्वच्छता पहल, परमेंद्र सिंह, प्रभात प्रकाशन वर्ष 2018
42- ISBN: 978–93–5322–516–1